पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

प्रतिवेदन

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं – सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में"

(17 मार्च – 19 मार्च, 2023)

शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हेतु भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के सहयोग से इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में दिनांक 17/03/2023 को प्रातः 11.30 बजे "राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं : सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में" विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (17 मार्च से 19 मार्च, 2023) का उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. संदीप बसु सर्वाधिकारी, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, विश्वभारती विश्वविद्यालय कोलकाता थे।

आधार वक्ता मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), के आदरणीय प्रो. मुकेश कुमार, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्र एवं प्रो. आभा रूपेंद्र पाल मैडम, पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ने की।

सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित कर मां सरस्वती एवं नेताजी के छायाचित्र पर माल्यापर्ण कर पुष्प अर्पित किया गया, सरस्वती वंदना के साथ कुलगीत की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात् मंचस्थ अतिथियों का स्वागत नन्हे पौधे प्रदान कर किया गया। स्वागत उद्बोधन विभागाध्यक्ष, इतिहास अध्ययनशाला एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व के प्रोफेसर प्रियंवदा श्रीवास्तव ने दिया। संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन संगोष्ठी के संयोजक डॉ.डी.एन. खुटे सर द्वारा किया गया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आधार वक्ता प्रो. मुकेश कुमार सर ने आधार वक्तव्य में सुभाषचंद्र बोस जी द्वारा किये गये राष्ट्र निर्माण संबंधी कार्यों एवं समकक्ष नेताओं के विचारों की भिन्नता को दर्शाया गया।

विशिष्ट अतिथि प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्र जी ने सुभाषाचंद्र बोस के विचारों का छत्तीसगढ में पडने वाले प्रभावों का उल्लेख किया जिसमें उन्होंने विशेष रूप से बैरिस्टर छेदीलाल द्वारा किये गये कार्यो पर प्रकाश डाला। दूसरे विशेष अतिथि प्रो. आभा रूपेन्द्र पाल मैडम ने नेताजी के क्रांतिकारी विचारों को दर्शाया एवं अत्याधुनिक सुविधाओं के अभाव होने पर भी नेताजी के द्वारा किये गये साहसिक कार्यो का उल्लेख किया।

मुख्य अतिथि संदीप बसु सर्वाधिकारी ने सुभाषचंद्र बोस जी के विभिन्न विचार एवं उनसे जुडी गतिविधियों का उल्लेख करते हुए उनके राजनीतिक संघर्ष व प्रमुख संगठन एवं गांधीजी के द्वारा चलाए गए आंदोलनों का समग्र रूप से उल्लेख किया। उनके द्वारा स्वतंत्रता के लिए किये जा रहे प्रयासों को ऐतिहासिक दृष्टि से देखने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. आभा रूपेन्द्र पाल मैडम, आधुनिक इतिहास के क्षेत्र में एक जीती जागती हस्ताक्षर है। उनके स्वर्णिम योगदान एवं सम्मान में समर्पित '' रिविजिटिंग हिस्ट्री'' पुस्तक का विमोचन सम्माननीय मंच के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। यह पुस्तक भारत के विभिन्न विद्वानों एवं शोधार्थियों के शोधपत्रों पर आधारित एक ऐतिहासिक ग्रंथ है।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के माननीय कुलपति प्रो. केशरी लाल वर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि – वर्तमान संदर्भ में नेताजी के विचार कहीं न कही हमसे जुडे हुए हैं। उनके संघर्ष एवं बलिदान की प्रासंगिकता के विषय में साहित्यकारों द्वारा कविताओं एवं लेखों के माध्यम से अमूल्य रचनाओं का लेखन किया जा रहा है। हम सभी भाग्यशाली है कि हमारे देश में नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे महापुरूष ने जन्म लिया।

अध्यक्षीय उदबोधन के पश्चात् मंचासीन अतिथियों का सम्मान स्मृति चिन्ह एवं राजकीय गमछा भेंट कर किया गया। धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी की आयोजक सचिव डॉ. बन्सो नुरूटी ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकाय के संकाय अध्यक्ष, प्राध्यापकगण एवं देश के 10 राज्यों से पधारे विद्वतजन, शोधार्थी एवं छात्र– छात्राएं उपस्थित थे। उदघाटन सत्र में लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी के प्रथम दिवस, उद्घाटन सत्र के समापन के पश्चात् दो अकादमिक सत्र हुए। दिनांक 17 मार्च 2023 के प्रथम अकादमिक सत्र के रिसोर्स पर्सन प्रो. जी.सी. पाण्डेय, मुंगेर विश्वविद्यालय, बिहार ने बताया कि किस तरह भारतीय कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं से सुभाषचंद्र बोस के राजनैतिक मतभेद होने के कारण भारत छोड़कर, भारतीय स्वतंत्रता हेतु विदेशी सहयोग प्राप्त करने जर्मनी, सिंगापुर, जापान के शासकों से संवाद किया और आजाद हिंद फौज का गठन किया। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्र सर ने राष्ट्रीय आंदोलन में छत्तीसगढ की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस सत्र में सुभाषचंद्र बोस जी की राजनैतिक विचारधारा पर आधारित कुल 7 शोध पत्रों का वाचन प्राध्यापकगण, छात्रों एवं शोधार्थियों द्वारा किया गया। प्रथम दिवस के द्वितीय अकादमिक सत्र के रिसोर्स पर्सन डॉ. बी.के. प्रसाद सर ने सुभाषचंद्र बोस के राजनैतिक जीवन के विभिन्न अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला। सत्राध्यक्ष प्रो. संदीप बसु सर्वाधिकारी सर ने सुभाषचंद्र बोस के राजनैतिक संघर्ष की विस्तृत जानकारी दी। इस सत्र में कुल 8 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में "राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं – सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में " विषय पर आधारित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस (18 मार्च, 2023) के प्रथम अकादमिक सत्र के अध्यक्ष प्रो. के.के. अग्रवाल सर ने सुभाषचद्र बोस के विचारों के छत्तीसगढ पर पडने वाले प्रभावों और उनके अनुयायी छत्तीसगढ के क्षेत्रीय नेताओं द्वारा उन्हें आगे बढाने के विषय पर चर्चा की। रिर्सोस पर्सन श्री धनंजय राठौर, संयुक्त संचालक, जनसंपर्क, छत्तीसगढ राज्य सूचना आयोग, रायपुर ने आजाद हिंद फौज की स्थापना पर चर्चा करते हुए बताया कि सुभाषचंद्र बोस महिला–पुरूष की समानता के समर्थक थे, इसे मूर्त रूप देने हेतु महिलाओं की पृथक रेजीमेंट बनायी गई थी। इस सत्र में कुल 08 शोधपत्रों का वाचन शोधार्थियो के द्वारा किया गया।

द्वितीय अकादमिक सत्र के अध्यक्ष प्रो.बी.एल. भदानी सर ने राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराओं में सुभाषचंद्र बोस के योगदान पर प्रकाश डालते हुए अल्पज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में अनुसंधान करने की जरूरत पर बल दिया। रिसोर्स पर्सन प्रो. पी.सी. महतो, शासकीय मजदूर किसान महाविद्यालय, पलामू, झारखंड ने सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व पर बात की। रिसोर्स पर्सन प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय, विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग ने आजाद हिंद फौज के गठन और इससे जुडे विभिन्न पहलूओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की। इस सत्र में कुल 10 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

तृतीय अकादमिक सत्र के अध्यक्ष प्रो. एल.एस. निगम सर ने सुभाषचंद्र बोस के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान की चर्चा करते हुए उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि जिस प्रकार दो रेल पटरी समानांतर चलती है और अंतिम छोर में एक साथ मिल जाती है, ठीक उसी प्रकार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा और सुभाषचंद्र की विचारधारा अलग–अलग है, पर लक्ष्य एक है। रिसोर्स पर्सन प्रो. एस.आई. कोरेटी, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, तुकडोजी संत महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर ने "नेताजी सुभाषचंद्र बोस के सपनों का भारत" विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सुभाषचंद्र बोस कहते थे – स्वाधीन भारत का कोई राजनैतिक दर्शन होना चाहिए। उन्होंने उनके राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में राजनैतिक योगदान की बात की। छत्तीसगढ के बालोद जिले के बाघमर गांव में आज भी प्रति वर्ष 5 दिसंबर से लगातार तीन दिन तक छत्तीसगढ एवं आसपास के राज्यों के आदिवासी बंधुओं के द्वारा कंगला मांझी के स्मृति दिवस पर, आजाद हिंद फौज की वेशभूषा धारण कर उनके विचारों की प्रासंगिकता को जीवित रखे हुए है। इस सत्र में कुल 7 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

चतुर्थ अकादमिक सत्र के अध्यक्ष प्रो. ए.के. पटनायक, पूर्व विभागाध्यक्ष, उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर, उडीसा ने "सुभाषचंद्र बोस का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान" विषय पर चर्चा की। इस सत्र के रिसोर्स पर्सन डॉ. पंकज सिंह, सहायक प्राध्यापक, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश ने बताया कि राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं एक साथ चल रही थी। एक ओर सामाजिक सुधार के क्षेत्र में शिक्षा के महत्व को ज्योतिबाराव फुले एवं सावित्री बाई फुले लेकर चल रहे थे तो दूसरी ओर मध्यप्रांत में किसान आंदोलन, मजदूर आंदोलन , आदिवासी आंदोलन भी भारत की स्वतंत्रता के

एक साथ आंदोलन कर रहे थे। सुभाषचंद्र बोस ने इंग्लैड से आई.सी.एस. की परीक्षा उतीर्ण की, लेकिन उनका रूझान भारतीय स्वतंत्रता की ओर होने के कारण उन्होंने उससे त्यागपत्र दे दिया और भारत आकर राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न हो गये। इस समय भारतीय राजनीति में दो विचारधाराएं चल रही थी, एक अहिंसात्मक विचारधारा और एक हिंसात्मक विचारधारा, लेकिन दोनों धाराओं का लक्ष्य केवल आजादी प्राप्त करना था। उन्होंने सुभाषचंद्र बोस के परिवार से संबंधित अनछुए पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। इस सत्र में कुल 8 शोध पत्रों का वाचन किया गया। संगोष्ठी का संचालन डॉ. सीमा पाल मैम ने किया।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग. में "राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं : सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में " विषय पर आधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी के तृतीय दिवस (19 मार्च 2023) के प्रथम सत्र की सत्राध्यक्ष प्रो. शम्पा चौबे ने स्वाधीनता आंदोलन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस एवं आजाद हिंद फौज के महत्वपूर्ण योगदान पर ध्यान केन्द्रित कराया, प्रो. चौबे ने कहा कि सुभाषचंद्र बोस ने गुलाम भारत को अभिशाप बताया और इसे स्वाधीन कराने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। रिसोर्स पर्सन डॉ. सुधी मण्डलोई ने "सुभाषचंद्र बोस एवं उनकी विचार योजना : स्वतंत्र भारत का दृष्टिकोण" विषय पर कहा कि सुभाषचंद्र बोस ने न केवल स्वतंत्र भारत का सपना देखा बल्कि उसे पूरा करने की विस्तृत व्यूह रचना की। भारत की बढती जनसंख्या व गरीबी भूखमरी, रोग से लडने के लिए उन्होंने कुटीर उद्योगों व वृहत उद्योगों के समन्वित विकास पर जोर दिया। इस सत्र में कुल 08 शोधपत्रों का वाचन शोधार्थियो के द्वारा किया गया।

तत्पश्चात अष्टम व अंतिम सत्र प्रारंभ हुआ जिसके सत्राध्यक्ष प्रो. रामकुमार बेहार, रिसोर्स पर्सन डॉ. पूजा शर्मा एवं रिपोर्टियर डॉ. सरिता दूबे थे। रिसोर्स पर्सन डॉ. पूजा शर्मा ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस का धार्मिक दर्शन एवं धर्मनिरपेक्षता पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की। सत्राध्यक्ष प्रो. रामकुमार बेहार ने गांधीजी का कांग्रेस पर नियंत्रण एवं उनके विचारों को छत्तीसगढ़ में भी चुनौती देने की बात कही। इस सत्र में कुल 6 शोध पत्रों का वाचन किया गया। तत्पश्चात् दोपहर 2 बजे "राष्ट्रीय अंदोलन की विभिन्न धाराएं – सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में" पर आधारित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ओमजी उपाध्याय, निदेशक, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली थे। मुख्य वक्ता प्रो. एच.के. पटेल , विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रवीण कुमार मिश्र , विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रिय विश्वविद्यालय थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति महोदय प्रो. केशरी लाल वर्मा, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति महोदय ने नेता जी के बलिदान की वर्तमान में प्रासांगिकता पर बात की। मुख्य अतिथि ओमजी उपाध्याय ने कहा कि देश में 8 धाराएं साथ–साथ चल रही थी, जिसमें सुभाषचंद्र बोस की धारा भी शामिल थी। विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रवीण मिश्र ने सुभाषचंद्र बोस के विचारों पर प्रकाश

प्रो. एच. के. पटेल सर ने मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में विस्तृत चर्चा की। स्वागत भाषण विभागाध्यक्ष प्रो. प्रियंवदा श्रीवास्तव के द्वारा दिया गया। संगोष्ठी का प्रतिवेदन संयोजक सचिव डॉ. बन्सो नुरूटी ने प्रस्तुत किया।

मंचासीन अतिथियों का राजकीय गमछा और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ. बन्सो नुरूटी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सीमा पाल ने किया। इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 65 शोध पत्रों का वाचन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के कुल 10 रिसोर्स पर्सन शामिल हुए। रिपोर्टियर के रूप में सहयोग दिया– डॉ. वासुदेव साहसी, डॉ. रीता पांडे, डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने। कार्यक्रम के पश्चात् एलुमनी मिट का आयोजन किया गया, जिसमें इतिहास विभाग के भूतपूर्व छात्र–छात्रा शामिल हुए।

इस संगोष्ठी में कुल 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें रायपुर क्षेत्र से बाहर के 87 एवं 63 स्थानीय थे। इस संगोष्ठी में वित्तीय सहायता के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस विश्वविद्यालय के अनुदान प्रकोष्ठ से राशि–1,00,000 रू और पंजीयन से राशि–1,20,600 रू प्राप्त हुए है तथा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद से राशि –3,50,000 रू की स्वीकृति प्राप्त हुई है जिसका अनुदान अभी अप्राप्त है जो कि देयकं प्रस्तुत करने के उपरांत प्राप्त होगी। अंत में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं – सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में पर सेमिनार विभिन्न विचारों को एक मंच पर लेकर आया है अतएव अपने उद्देश्य में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी पूर्णतया सफल रहा। इस तरह संगोष्ठी "राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न धाराएं – सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज के विशेष संदर्भ में" सचमुच एक सार्थक प्रयास रहा सुभाषचंद्र बोस के बहुआयामी विचारों और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता बनी हुई ।

19/03/2023
डॉ. बन्सो नुरुटी